05

गंगा में आस्था

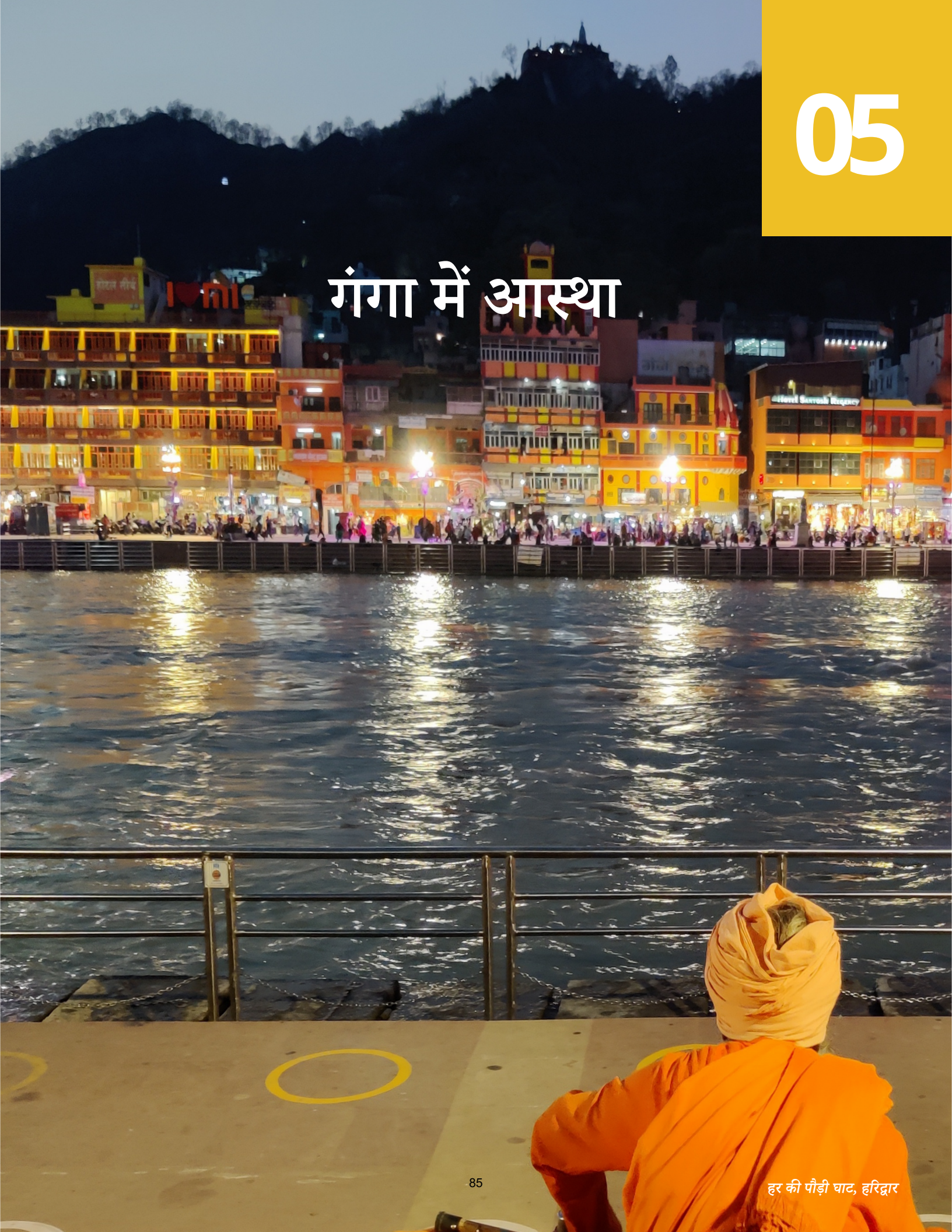

हर की पौड़ी घाट, हरिद्वार

Ratan
Ghee

त्रिवेणी संगम, प्रयागराजी

दशाश्वमेध घाट, वाराणसी

गंगा नदी में आस्था

पवित्र गंगा नदी उत्तराखंड में पश्चिमी हिमालय के गंगोत्री ग्लेशियर से उद्गमन है और उत्तर भारत के गंगा के मैदान के माध्यम से लगभग 2500 किमी दक्षिण और पूर्व में बांग्लादेश में बहती है, जहां यह बंगाल की खाड़ी में खाली हो जाती है। लगभग 37% भारतीय आबादी [1] इसके बेसिन में रहती है, और शेष प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इससे जुड़ी हैं, गंगा नदी स्पष्ट रूप से भारतीयों का एक अवियोज्य पहलू है।

हिंदुओं और मुसलमानों के दो प्रमुख समुदायों के बीच, पवित्र नदी एक महत्वपूर्ण "एकीकृत कारक" के रूप में उभरी है। हिंदू मोक्ष प्राप्ति के लिए "पवित्र गंगा जल" में स्नान करते हैं और मुसलमान भी वुज़ू के लिए गंगाजल का उपयोग करते हैं।[2]

हिंदुओं के लिए विशेष रूप से पवित्र नदी गंगा आध्यात्मिक विरासत की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। हिंदुओं का मानना है कि गंगा नदी में डुबकी लगाने से पापों से मुक्ति मिलती है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। गंगा नदी को हिन्दुओं की सबसे पवित्र नदी माना जाता है, और गंगा नदी को देवी मां के रूप में पूजा जाता है। हिंदू पौराणिक कथाओं में गंगा का जन्म ब्रह्मा के कलश से हुआ था जब उन्होंने ऋषि वामन के पैर धोए जोकि भगवान विष्णु के 10 अवतारों में से एक थे। पौराणिक कथाओं के अनुसार, नदी के रूप में गंगा को राजा भगीरथ द्वारा पृथ्वी पर अवतरित कराया गया था, जिन्होंने कई वर्षों तक भगवान ब्रह्मा की तपस्या की और उन्हें पृथ्वी पर अपने कलश से गंगा को मुक्त करने के लिए प्रसन्न किया।

ऊपर की छवि - गंगा नदी के तट पर पूजा करते पुजारी

अगले पृष्ठ पर मानचित्र - पंचक्रोशी यात्रा मानचित्र-वाराणसी में महत्वपूर्ण तीर्थ मार्गों में से एक है।

वुज़ू
नमाज़ में खड़े होने से पहले नहाना या खुद को धोना।

मोक्ष
आनंद की स्थिति में परवास केअंतहीन चकर से मुक्ति पाना।

मुक्ति
व्युत्पन्न (लैटिन से: साल्वाटियो, साल्वा से, 'सुरक्षित, बचाया') नुकसान या गंभीर स्थिति से बचाने या संरक्षित होने की स्थिति।

गंगा महोत्सव
दिवाली केबाद हर साल कार्तिक महीने केग्यारहवें दिन, अथारत परोबोधनी एकादशी से मनाया जाता है। त्योहार 5 दिनों तक जारी रहता है; जिसका अंतिम दिवस देव दीपावली होता है। यह पूर्णिमा की रात होती है और इसे कार्तिक पूर्णिमा केनाम से जाना जाता है।

अधिक जानकारी के लिए

स्कैन कोड

प्राचीन शास्त्रों में गंगा का उल्लेख यह प्रदर्शित करता है कि गंगा एक पवित्र नदी है। यहाँ कुछ ग्रंथ हैं जो गंगा का उल्लेख करते हैं: [3]

गंगा को देवी गंगा के रूप में अभिव्यक्त किया गया है, जिसे महाभारत में "पवित्र जल से पैदा हुई सभी नदियों में सर्वश्रेष्ठ" रूप में वर्णित किया गया है। गंगा की माता 'मेना' हैं, और उनके पिता हिमालय पर्वत के अवतार 'हिमावत' हैं। एक मिथक यह है कि गंगा ने राजा शांतनु से शादी की, लेकिन उनका विक्षुब्ध अंत तब हुआ जब देवी द्वारा अपने ही बच्चों को डुबोने का पता चलता है। महाभारत में गंगा भीष्म की मां है और कुछ मिथकों में अग्नि, जो कि अग्नि देवता है, के साथ उत्पन्न हुये उनके पुत्र युद्ध के हिंदू देवता, स्कंद (कार्तिकेय) है।

ऊपर की छवि - मछली ने समुद्र में जहाज का मार्गदर्शन किया और तूफान के दौरान जहाज को सुरक्षित रखा। (स्रोत-https://gosthala.com/must-visit

गंगा नदी का उल्लेख प्राय: हिंदू पौराणिक कथाओं की पृष्ठभूमि के रूप में किया जाता है, जैसे कि वे स्थान जहाँ प्रसिद्ध व्यक्ति आरती और मृत्यु के उपरान्त अन्य विभिन्न कार्य किए जाते है। शिव पुराण के अनुसार, गंगा शिव के बीज को ले जाती है, जो नरकट के झुंड में ले जाने पर स्कंद बन जाता है। मत्स्य पुराण और महाप्रलय की कहानी के अनुसार प्रथम मनुष्य मनु ने एक विशाल मछली को नदी में फेंक दिया, जो समुद्र में तैरने से पहले विशालकाय रूप से बढ़ जाती है।

गंगा बेसिन में धार्मिक स्थान का महत्व

गंगा बेसिन समृद्ध संस्कृति और आध्यात्मिक विविधता का प्रमाण है। यह बेसिन के किनारे विभिन्न धर्मों के धार्मिक स्थल से स्पष्ट हैं। मानचित्र सभी महत्वपूर्ण स्थलों का त्वरित दृश्य को दर्शाता है।

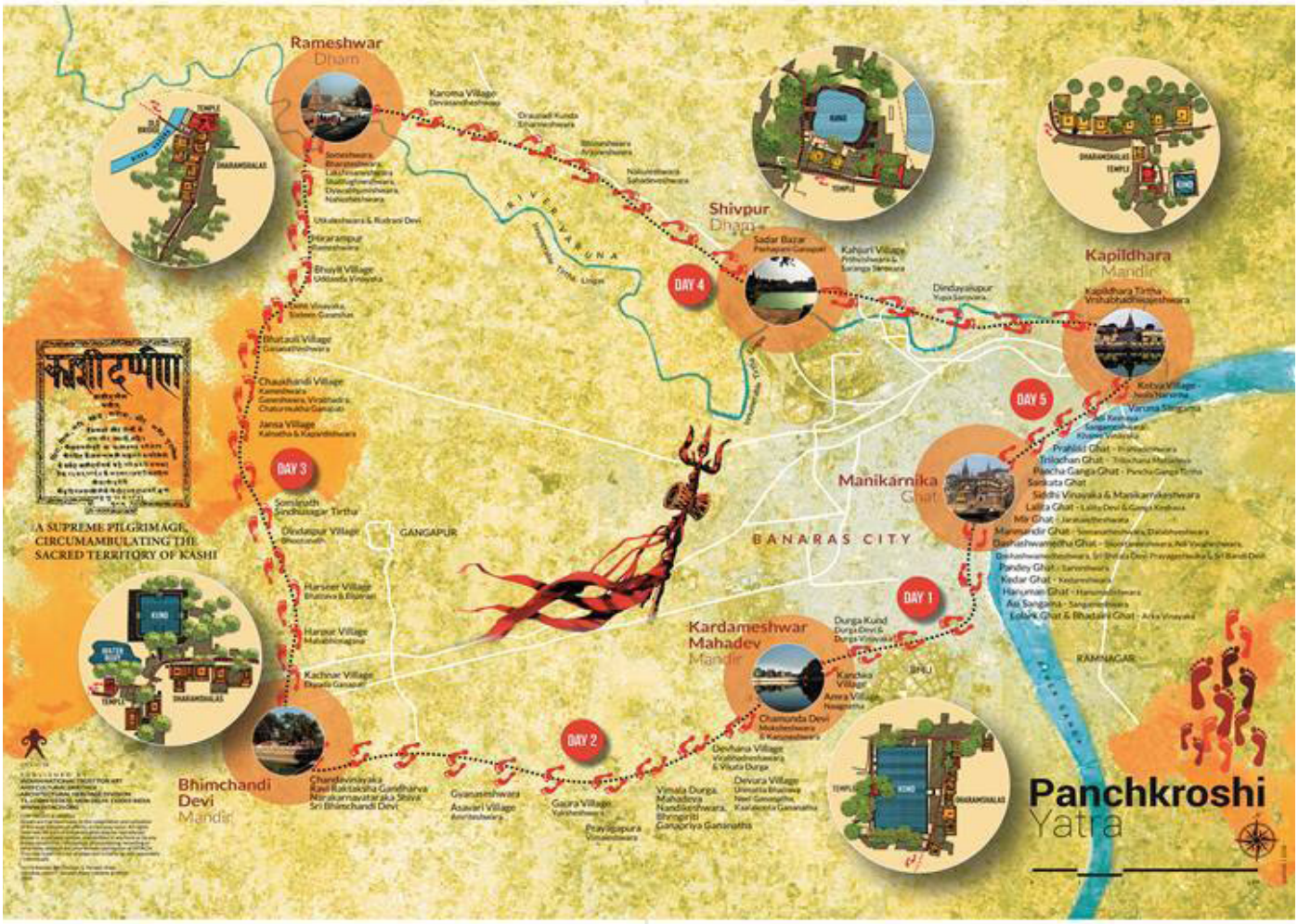

आस्था की अभिव्यक्ति

गंगा नदी के तट पर मनाये जाने वाला त्योहार अनादि काल से तट पर रहने वाले कई धर्मों की आस्था को परकट करता है। इस भाग में हमने गंगा नदी और उसके बेसिन के तट पर बड़ी आबादी वाली धार्मिक सभाओं दवारा मनाए जाने वाले परमुख त्योहारों का परिचय दिया हैं।

कुंभ मेला

गंगा नदी के तट पर मनाया जाने वाला सबसे बड़ा त्योहार 'कुंभ मेला' है जो हर 12 साल में हरिदवार, उज्जैन, नासिक और इलाहाबाद (परयाग) में मनाया जाता है। इन स्थानों में कुंभ का उत्सव का सबसे पवितर समय सूयर, चंदरमा और बृहस्पति की ज्योतिषीय स्थितियों की अदिवतीय अवस्था के अनुसार निधाररित होता है। (4) कुंभ वैदिक काल से मनाया जाने वाला पवर है और हिंदुओं के लिए सभी तीर्थों में सबसे पवितर है। कुं भ मेले में भाग लेने के लिए परत्येक स्थान से लाखों तीथरयातरी, साधु तथा संत आते हैं जो इसे विश्व की सबसे बड़ी पवितर सभाओं में से एक बनाते हैं। कुंभ मेले की उत्पत्ति कई हिंदू गरंथों में मिलती है। इन गरंथों के अनुसार, देवता दूध के आदिकालीन सागर का मंथन करना चाहते थे, ताकि नीचे ि स्थत अमृत युक्त कलश (कुंभ) को पराप्त किया जा सके । ऐसा करने के लिए, देवताओं ने अमृत साझा करने का वादा करते हुए असुरों (राक्षसों) की मदद ली। (5) उन्होंने एक साथ एक हजार साल तक समुदर मंथन किया, लेकिन जब अमृत अभ्युदय होने लगा, तो असुर कलश को छीन लेना चाहते थे और देवताओं के साथ कोई भी अमृत साझा नहीं करना चाहते थे। असुरों और देवताओं ने अमृत के कलश के लिए बारह दिन और रात युदध किया। पूरी दुनिया में, कुंभ मेला हिंदुओं के लिए अत्यंत महत्वपूणर है। गंगा में सनान कुंभ मेले का मुख्य आयोजन है, जिसके संबंध में यह कहा जाता है कि इसमें अनशवर अमृत की बूं दें हैं। ऐसा माना जाता है कि गंगा में सनान, विशेष रूप से कुंभ मेले के समय, लोगो को पिछले सभी कर्मों से मुक्त करता है और मोक्ष या मुक्ति का मागर उन्मुक्त करता है। शास्त्रों दवारा परमाणित है कि कुंभ मेले के दौरान गंगा में सनान करने से लाखों अन्य अनुष्ठानों के समान परभाव पड़ता है।

छठपूजा

छठ पूजा एक हिंदूओं का त्योहार है जो पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने के लिए सूर्य देवता "सूर्य" को धन्यवाद देने के लिए समर्पित है। हालांकि इस पर्व से गंगा नदी का सीधा जुड़ाव है। सनान करना, निर्जला उपवास करना, लंबे समय तक जल में खड़े रहना और सूर्य को अर्घ्य देना, ये सभी चार दिन तक चलने वाले पर्व के अनुष्ठानों का हिस्सा हैं। हिंदू लोगों का मानना है कि सुबह की धूप कई बीमारियों को ठीक करने में मदद करती है तथा उपचार का भी एक बड़ा स्रोत है।

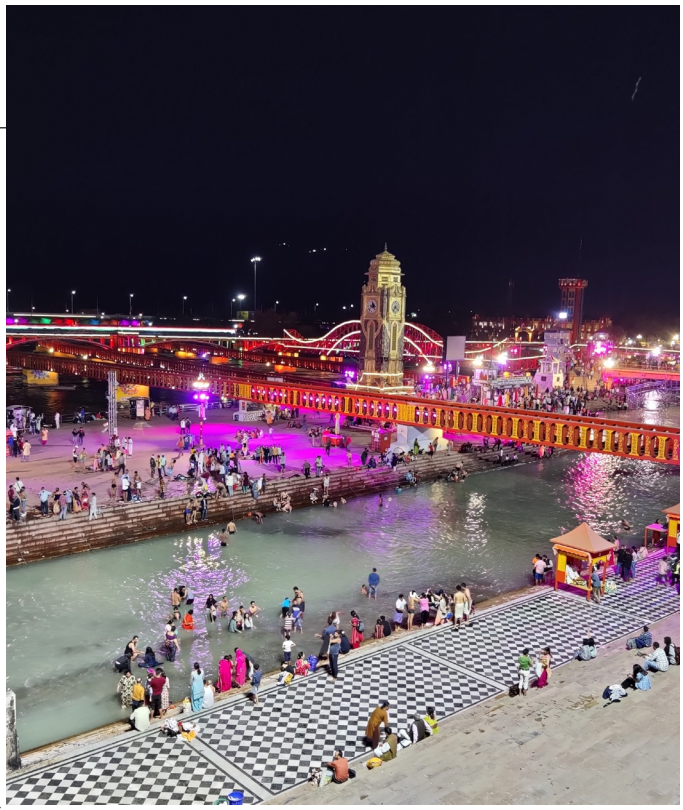

ऊपर की छवि - हर की पौड़ी हरिद्वार महाकुंभ 2021 का एक दृश्य

उपरोक्त छवि - छठ पूजा पर सूर्य को अर्घ्य देती महिलाएं

छठ पूजा के अनुष्ठान भक्त के शरीर तथा मन (वृत्ति) में ब्रह्मांडीय सौर ऊर्जा अवशोषित करने हेतु तैयार किए गये हैं। प्राचीन काल में, ऋषि उसी विधि का उपयोग करते थे जिसका उपयोग हम छठ पूजा के दौरान बिना किसी प्रकार का भोजन और जल लिए करते हैं। वे इसी तरह की विधि की मदद से सीधे सूर्य से जीवन के लिए आवश्यक ऊर्जा को अवशोषित करने में सक्षम थे।[6]

छठ पूजा के पहले दिन उपासक गंगा में स्नान करते हैं और सूर्य के लिए प्रसाद तैयार करने हेतु घर में गंगा जल (गंगाजल) या नदी का जल लाते हैं। तीसरे दिन, एक दिन के उपवास के बाद, उपासक गंगा के तट पर लौटते हैं और डूबते सूर्य को प्रार्थना और प्रसाद चढ़ाते हैं। छठ के अंतिम दिन भोर में भक्त गंगा में लौटते हैं और उगते सूरज को प्रसाद चढ़ाते हैं, जो इसे प्रदान करने वाली अनन्त ऊर्जा के लिए धन्यवाद देते हैं।

सूर्योदय और सूर्यास्त का महत्व - अधिकांश मनुष्य सूर्योदय और सूर्यास्त के दौरान सुरक्षित रूप से सौर ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं। नतीजतन, छठ पूजा उत्सव में देर शाम और सुबह जल्दी सूर्य को अर्घ्य देने की परंपरा शामिल है।

गंगा महोत्सव

गंगा महोत्सव गंगा के विभिन्न पहलुओं का सम्मान करने के लिए वाराणसी में आयोजित एक विशेष पांच दिवसीय उत्सव है। यह त्यौहार माँ गंगा की आध्यात्मिकता, पवित्रता और शक्ति के साथ-साथ भारतीयों को पहचान और गौरव, साथ ही साथ वह पोषण भी प्रदान करता है। कहा जाता है कि इस दिन देवताओं को स्वर्ग से गंगा में स्नान करने के लिए अवतरित किया जाता है। गंगा महोत्सव के दौरान सैकड़ों लोग दीपक जलाते हैं, वैदिक मंत्रों का जाप करते हैं और गंगा में स्नान करते हैं।

उत्सव के दौरान काशी में 5 दिनों में कई गतिविधियों का आयोजन किया जाता है-

शिल्प मेला - चौक घाट पर राष्ट्रीय शिल्प मेला लगता है, जहां देश भर के कारीगर इकट्ठा होते हैं और अपने पारंपरिक हस्तशिल्प का प्रदर्शन करते हैं।

सांस्कृतिक अन्वेषण - यह उत्सव गायन और वाद्य संगीत और नृत्य के शास्त्रीय एवं लोक प्रदर्शनों के माध्यम से काशी की विरासत की समृद्धि का अन्वेषण करता है।

गंगा आरती - त्योहार का एक प्रमुख आकर्षण गंगा आरती है जो दशाश्वमेध घाट पर शाम को होती है।

देव दीपावली - महोत्सव का पांचवां दिन देव दीपावली के रूप में मनाया जाता है। हजारों दीपों और सुंदर रंगोलीयों से घाटों को सुशोभित किया जाता हैं।

ऊपर की छवि - गंगा महोत्सव पर वाराणसी घाट पर हजारों दिवस प्रकाश स्रोत: http://www.cozynuk.com

ऊपर की छवि - गंगा दशहरा पर गंगा आरती (रोत: https://www.ixigo.com/ganga-dussehra-2019)

गंगा दशहरा

गंगा के स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरित होने के उपलक्ष्य मे ज्येष्ठ महीने के पहले दस दिन (जून में) गंगा को समर्पित है | इस दिन गंगा को मां और देवी के रूप में पूजा जाता हैं और गंगा की विशेष पूजा और आरती की जाती है। [5]. गंगा चुनरी, गंगा दशहरा पर आयोजित एक विशेष समारोह है जिसमें गंगा की मूर्ति (प्रतिमा) को 108 रंगीन साड़ियों में लपेटा जाता है। तीर्थयात्री गंगा दशहरा के दौरान अपनी दैनिक पूजा में उपयोग करने के लिए गंगा से मिट्टी और जल भी एकत्रित करते हैं।[6].

बुद्ध-पूर्णिमा

गौतम बुद्ध के जन्म के स्मरण के रूप मे बुद्ध पूर्णिमा मनायी जाती है। 'बुद्ध पूर्णिमा', 'वैसाखी बुद्ध पूर्णिमा', और 'वेसाक' सभी उनके जन्म की वर्षगांठ के नाम हैं। बुद्ध जयंती हिंदू कैलेंडर (जो प्रायः अप्रैल या मई में) के अनुसार, वैशाख के महीने में पूर्णिमा के दिन आती है। हालाँकि, यह वास्तव में एशियाई चंद्र-सौर कैलेंडर पर आधारित है, यही कारण है कि हर साल तारीखें बदलती रहती हैं। लुंबिनी (आधुनिक नेपाल) में, 563 ईसा पूर्व में पूर्णिमा तिथि (पूर्णिमा के दिन) पर, भगवान बुद्ध का जन्म राजकुमार सिद्धार्थ गौतम के रूप में हुआ था। [7] हिंदू धर्म में, बुद्ध को भगवान विष्णु का नौवां अवतार माना जाता है। धर्म (कर्तव्य), अहिंसा, सद्भाव और दया सभी का उपदेश गौतम बुद्ध ने दिया था। 30 साल की उम्र में, उन्होंने सच्चाई की खोज करने और खुद को तृष्णा (दुखः)[7] से मुक्त करने की आशा में तपस्या करने के लिए अपनी सांसारिक संपत्ति और रियासत को त्याग दिया। इस दिन, बौद्ध और बौद्ध अनुयायी प्रार्थना करते हैं, ध्यान करते हैं, उपवास करते हैं और बुद्ध की शिक्षाओं पर चर्चा करते हैं। पवित्र गंगा में स्नान करने की भी परंपरा है, जिसके बारे में माना जाता है कि इससे पाप धुल जाते हैं।

महावीर-जयंती

महावीर जयंती को महावीर जन्म कल्याणक या भगवान महावीर की जयंती के रूप में जाना जाता है। हिन्दू पंचांग के अनुसार चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की 13वीं तिथि को महावीर जयंती मनाई जाती है। [8] महावीर जयंती जैन समुदाय में सबसे पवित्र त्योहारों में से एक है। इस अवसर पर जैन प्रार्थना करते हैं, रथ यात्रा करते हैं और मंदिरों में जाते हैं। महावीर जयंती जैन समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है, यह भारत और विश्व में आध्यात्मिक उत्साह तथा उत्सव की भावना के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर भक्तों द्वारा दान कार्य, स्तवन पाठ, रथ में भगवान का जुलूस तथा जैन मुनियों तथा साध्वियों द्वारा आध्यात्मिक व्याख्यान मुख्य आकर्षण हैं। रथ यात्रा एक जुलूस है जिसमें भगवान महावीर की मूर्ति को ले जाया जाता है। भक्तों द्वारा भजन का पाठ किया जाता है। जुलूस से ठीक पहले, भगवान महावीर की मूर्ति को गंगाजल से औपचारिक स्नान कराया जाता है जिसे 'जल अभिषेक' कहा जाता है।

ऊपर की छवि - महावीर जयंती 2019

स्रोत - https://www.oneindia.com/india/mahavir-

ऊपर की छवि - बौद्ध भिक्षु बुद्ध की एक मूर्ति ले जाते हैं क्योंकि वे महाबोधि मंदिर में एक जुलूस में भाग लेते हैं

गंगा नदी के तट पर महत्वपूर्ण अनुष्ठान

इन स्थानों पर लोग अपनी स्थानीय मान्यताओं तथा परंपराओं के लिए कुछ अनुष्ठान और समारोह भी आयोजित करते हैं। जल मानव शरीर (पंच-महाभूत) के पांच घटक तत्वों में से एक है, और पवित्र गंगाजल के करीब होने से ज्यादा शुभ क्या हो सकता है? गंगा के अनुष्ठान विविध और विशिष्ट हैं, जो हर साल लाखों लोगों को आकर्षित करते हैं। गंगा के आसपास के अनुष्ठान की उत्पत्ति हजार साल से भी अधिक पुरानी है। वे वैदिक शास्त्रों में गहराई से निहित हैं जो संस्कारों को निधाररित करते हैं। संस्कार 'परतिज्ञा, 'बलिदान' और 'अनुष्ठान' की एक शरृंखला है, जो संस्कार के रूप में कायर करते हैं और मानव जीवन के विभिन्न चरणों को चिहनत करते हैं। हिंदू मान्यता के अनुसार परत्येक व्यक्त को 16 संस्कारों से गुजरना पड़ता है। ये अनुष्ठान समय के साथ विकसित हुए हैं और गंगा और उनके भक्तों को कई तरह से परभावित करते है, साथ ही उनसे परभावित भी हुए हैं। इनमें से तीन संस्कार गंगा नदी के तट पर किए जाते हैं। यह भाग गंगा नदी के साथ मुं डन, विवाह और अंत्येष्टि के संबंध पर विवरण देता है।

मुंडन-संस्कार

संस्कार मुं डन संस्कार को चूड़ाकरण के नाम से भी जाना जाता है। यह सोलह संस्कारों में से आठवां संस्कार है जिसे एक हिंदू को अपने जीवनकाल में पूरा करने की आवश्यकता होती है। यह बच्चे के पहली बार बाल कटवाने से सम्बंधित है, जिसे पहला या तीसरा जन्म दिन के बाद मुं डन कराया जाता है। यह अनुष्ठान इस विश्वास पर आधारित है कि जन्म से बाल पिछले जीवन से अवांछित लक्षणों की एक कड़ी का परतिनिधित्व करते हैं जिन्हें तोड़ा जाना चाहिए। यह ऋषिकेश और हरिदवार जैसे पवितर स्थानों या उनके परिवार के मंदिर में आयोजित एक सामान्य अनुष्ठान समारोह है। बच्चों के मुं डन के अलावा, अधिकांश वयस्क पवितर स्थानों पर जाते समय विभिन्न अवसरों पर अपना सिर मुं डवाते हैं। फिर बालों को औपचारिक रूप से नदी में विसर्जित किया जाता है।

विवाह-संस्कार

हिंदू परंपरा में विवाह का तात्पयर शादी से है। विवाह सबसे महत्वपूणर संस्कार (जीवन चकर संस्कार) है जो विवाहित जोड़ों और समाज में उनकी भूमिकाओं के उच्च मूल्य के कारण वयिक्तयों दवारा किया जाता है। परंपरागत रूप से यह मिहलाओं के लिए और शूदरों में पुरुषों के लिए किया जाने वाला एकमातर संस्कार था। इसके अनुसार पति पत्नी (एक जोड़ा) जीवन भर साथ रहेगा या जब तक पति पत्नी का परित्याग नहीं कर देता। मिहला और पुरुष दोनों के लिए, विवाह सामाजिक जीवन की शुरुआत का परतिनिधित्व करता है। यह मिहलाओं को धार्मिक मामलों में भाग लेने में भी सक्षम बनाता है। विवाह का महत्व हिंदू धार्मिक पौराणिक कथाओं में भी परिलक्षित होता है, जहां अविवाहित देवताओं को अक्सर शिक्तहीन के रूप में चितिरत किया जाता है। एक चितरण में, उदाहरण के लिए, भगवान शिव एक लोथ मातर है जब तक कि शिक्त से उनका विवाह उन्हें पुनरजीवित नही कर देता। फलस्वरूप, हिंदू धमर में विवाह 'धार्मिक' और 'सामाजिक कायर' हैं, जो धार्मिक साहित्य में परतिबिबित होते हैं।

अंत्येष्ठी संस्कार

अंतिम संस्कार, या श्मशान, सोलहवां संस्कार है जिसे एक हिंदू की आत्मा को मृत्यु के बाद / गरहण करना चाहिए। [1]

यह एक कमरकांडीय परिकरया है जिसमें किसी वयिक्त के नश्वर अवशेषों को आग की लपटों में डाल दिया जाता है। श्मशान का महत्व केवल मृत शरीर को एक स्वच्छ तरीके से निस्तारण से कही अधिक है; इसका मुख्य लक्ष्य स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर के बीच की कड़ी को तोड़ना है, जिससे दिवंगत आत्मा को स्वर्गीय गरहों की यातरा करने की अनुमति मिलती है।

यह उस विश्वास पर आधारित है जो भगवद गीता में व्यक्त किया गया है - कि आत्मा अविनाशी है और संचित कमर के अनुसार जन्म और मृत्यु के चकर में अपनी यातरा जारी रखती है, और यह मुक्ति (दफन या खुले विघटन के विपरीत) पाने का सबसे अधिक परभावी तरीका है। नदी के तट पर आमतौर पर श्मशान स्थलों को पराथमिकता दी जाती है, हरिदवार में कनखल और वाराणसी में मणिकर्णिका घाट देश में दो ऐसे परसिदध स्थान हैं (उनके चारों ओर कई किंवदंतियाँ बुनी गई हैं)। दाह संस्कार के बाद, राख और कोई अवशेष, यिद कोई हो उसे नदी में विसर्जित या परवण किया जाता है।

Garbhadhana (Conception)	Namakaran (Name-giving)	Karnavedha (Piercing the earlobes)	Samavartana (End of studentship)
Pumsavana (Engendering a male issue)	Nishkramana (First outing)	Vidyaramha (Learning of Alphabet)	Vivaha (Marriage Ceremony)
Simantonnayana (Hair-parting)	Annaprasana (First Solid Food)	Upanayana (Sacred thread initiation)	Vanaprastha (Sanyasa)
Jatakarma (Birth rituals)	Mundan (Shaving of head)	Vedarambha (Beginning Vedic study)	Antyesthi (Funeral rites)

ऊपर की छवि - सोलह संस्कार स्रोत - https://www.ritiriwaz.com/the-sixteen-sanskaras-in-hinduism/

प्रतीकात्मकता समिति

गंगा के तट पर देवी और देवता के साथ जानवरों की

भारतीय उपमहाद्वीप की शक्तिशाली नदियाँ अर्थात् गंगा, (उनके वाहन-मकर पर खड़े होने का प्रतिनिधित्व करती हैं)। हिंदू पौराणिक कथाओं में, मकर एक पौराणिक समुद्री जीव है। देवी गंगा को हिंदू कला में एक पौराणिक जीव के रूप में दर्शाया गया है जिसे मकर के रूप में जाना जाता है, जिसमें एक हाथी का सिर और एक मछली का शरीर होता है। देवी का वाहन या सवारी मकर है। मकर को प्रायः ज्योतिष में जल घोड़े के रूप में प्रदर्शित किया गया है और यह मकर राशि के राशि चक्र से मेल खाता है, जिसे बकरी के सिर और मछली के शरीर के रूप में दर्शाया गया है। फिर भी मकर का एक और चित्रण मगरमच्छ या घड़ियाल के रूप में है, जिसे भगवान वरुण – 'हवाओं के देवता' के वाहन के रूप में भी दर्शाया गया है। मकर द्वार तथा दहलीज के संरक्षक हैं, सिंहासन कक्ष और मंदिर प्रवेश द्वार की रखवाली करते हैं; यह हिंदू और बौद्ध मंदिर की प्रतिमा में सबसे अधिक आने वाला जीव है और यह गार्गांयल या प्राकृतिक बसंत युक्त धारा के रूप में भी दिखाई देता है। मकर के आकार के झुमके जिन्हें मकर कुंडल कहा जाता है, कभी-कभी हिंदू देवताओं द्वारा पहने जाते हैं, उदाहरण के लिए शिव, संहारक, संरक्षक-देवता विष्णु, सूर्य देवता सूर्य और माता देवी चंडी [10]। मकर प्रेम देवता 'कामदेव' का प्रतीक चिन्ह है, जिन्हें मकरध्वज के नाम से भी जाना जाता है, "जिसका ध्वज एक मकर को दर्शाता है" और उसका कोई समर्पित मंदिर नहीं है।

नदी देवी गंगा 800-900 बलुआ पत्थरः भारत की दो सबसे बड़ी नदियाँ, गंगा (गंगा) और यमुना, एक ही देवी के नाम से पहचानी जाती हैं। उन्हें प्रायःमंदिर मे प्रवेशद्वारके निम्नतर हिस्से के दोनों ओर दशाया जाता था। और यहीं पर यह प्रतिमा की स्थापना की जाती थी। यहां गंगा एक कल्पित जल जीव पर खड़ी है, जिसके ऊपर उठे मुख से एक छोटी नर आकृति का निर्गम होता है। सैन फ्रांसिस्को का एशियाई कला संग्रहालय

पुरातन कला का चित्रण

ऊपर की छवि - गंगा का अवतरण

स्रोत - https://www.flickr.com/photos/dbasys/8733466085

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति और पौराणिक कथाओं में नदियों का बहुत महत्व है। भारत की तीन मुख्य नदियाँ अर्थात् गंगा, यमुना और अब लुप्त हो चुकी सरस्वती को देवी के रूप में चित्रित किया गया है और भारत की मूर्तिकला कला में यह इस प्रकार चित्रित किया गया है। हमे प्रायः ऐसी मूर्तिकला के दर्शन होते हैं। जो हमें प्राचीन काल में नदियों के महत्व, उनके आसपास की पौराणिक कथाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है। गंगा अवतरण (महाबलीपुरम) एक ऐसा ही उदाहरण है। यह दो अखंड शिलाखंडों पर एक विशाल उभरी हुयी नक्काशी है और इसे 1984 से यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामित किया गया है। उभरी हुयी नक्काशी भारतीय शिला-मूर्तिकला का सबसे अच्छा वर्णन करता है और यह भगीरथ के नेतृत्व में स्वर्ग से पवित्र गंगा नदी को धरती पर उतरने के वृत्तांत को दर्शाती है।

तीन नदियों का संधि-स्थल (त्रिवेणी संगम)

तीन नदियों का संधि-स्थल (त्रिवेणी संगम)

ऊँचे हिमालय से नीचे उतरते हुए या भारतीय उपमहाद्वीप के प्राचीन वनाच्छादित पठारों में धीरे-धीरे उत्पन्न होकर, भारत की नदियाँ अनादि काल से जीवन के ढेरों रूपों को बनाए रखने, पोषित करने और विकसित करने में मदद करती रही हैं। उन्होंने न केवल मानव जीवन बल्कि वनस्पतियों और जीवों के प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों प्रकार के उतार-चढ़ाव को पूरा किया है जो एक जटिल और सहजीवी तरीके से एक दूसरे से संबंधित हैं।

दाँयी छवि - तीन नदियों का संधि-स्थल (त्रिवेणी संगम)

स्रोत: https://artsandculture.google.com

सेवक आकृतियों के साथ गंगा और यमुना, शिव की द्वारपालिका (द्वारपालक) के रूप में।

दाँयी छवि - तीन निदयों का संधि-स्थल (त्रिवेणी संगम)
स्रोत - https://artsandculture.google.com

देवी पृथ्वी को बचाते हुए विष्णु

दृश्य सामग्री (अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज के फोटो अभिलेखीय होल्डिंग्स से ली गई) को यहां बहुत ही चुनिंदा आधार पर प्रदर्शित की गयी है, भारत के सिंधु-गंगा डोब, मध्य, पश्चिमी, दक्षिणी और पूर्वी भागों के ऐतिहासिक स्थलों और स्थानों से आती है।

दाँयी छवि - देवी पृथ्वी को बचाते हुए विष्णु
स्रोत - https://artsandculture.google.com

आकाशीय गंगा का अवतरण गंगा-अवतरण

दायां चित्र - आकाशीय गंगा का अवतरण (गंगतवरण)
स्रोत: https://artsandculture.google.com

भारत की संस्कृतियों और समुदायों ने इन असंख्य नदियों के किनारे, तट और घाटियों के साथ अपनी नियति को गढ़ा है और आकर्षक ढंग से असंख्य तरीकों से "जीवन के पालनहार" का उत्सव मनाया। उमासंहिता - शिव अपने जटाओं (लट) पर गंगा (त्रिपाठा और त्रिस्रोता रूप में) समाहित करते हैं।

दाईं ओर की छवि - उमासाहिता- गंगा स्रोत प्राप्त करने वाले शिव - https://artsandculture.google.com

पौराणिक कथाओं, लोककथाओं, साहित्य, त्योहारों और अनुष्ठानों और "नदी" (बहता हुआ जल) की अवधारणा से निपटने वाले भारत के कई कला रूपों ने लयबद्ध और चक्रीय बंधन को समझने और अभिग्रहण करने का गहन प्रयास किया है साथ ही "नदी" (बहता हुआ जल), जीवन के संबद्ध रूपों और उनकी महत्वपूर्ण अन्योन्याश्रयता के बीच परस्पर क्रिया कलाप करते है। शिव गंगा को अपने जटा से मुक्त करते हैं। (गंगा विसर्जन मूर्ति))

दायी छवि - गंगा को अपने जटाओं से मुक्त करते हुए शिव (गंगा विसर्जन मूर्ति) स्रोत -https://artsandculture.google.com

गंगा ऋषि जाह्नु के जल पात्र में अभिग्रहण हुई और हिमालय (जाह्नवी के रूप में गंगा) से बहने के लिए उनके कान के माध्यम से छोड़ी गई।

दायी छवि - जाह्नवी स्रोत के रूप में गंगा स्रोत- https://artsandculture.google.com

गंगाजल का महत्व

उपरोक्त छवि - हर की पौड़ी, हरिद्वार में उत्सव के दौरान गंगा नदी के जल की जय-जयकार करते श्रद्धालु।

गंगा का पानी, जिसे 'गंगाजल' के नाम से जाना जाता है और इस जल को पवित्र माना जाता है आमतौर पर अधिकांश हिंदू घरों में पाया जाता है। गंगाजल का भारतीय परिवारों में धार्मिक, आध्यात्मिक और स्वास्थ्य लाभ के दृष्टिकोण से बहुत महत्व है। ऐसा माना जाता है कि पवित्र जल जहां भी छिड़का जाता है, वह प्रत्येक स्थान शुद्ध हो जाता है। गंगाजल सभी नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर भगाता है और उस स्थान को जीवंत करने वाली सकारात्मक ऊर्जा को बाहर लाता है। वैज्ञानिक शोध के अनुसार गंगाजल में अनिश्चितकालीन शेल्फ लाइफ होती है और इसमें सेल्फ-क्लीनिंग गुण भी होते हैं। गंगाजल के कई कथित स्वास्थ्य लाभ हैं और माना जाता है कि यह त्वचा और पेट की बीमारियों को ठीक करता है। स्पष्ट रूप से गंगाजल खराब नहीं होता है और इसे बहुत लंबे समय तक संग्रहीत किया जा सकता है।

गंगाजल की लंबी आयु का विज्ञान

माना जाता है कि गंगा के पास कई अन्य औषधीय तत्व हैं, गंगा के पास विशुद्ध रूप से आस्था आधारित मान्यता नहीं हैं, बल्कि अब बहुत से वैज्ञानिक प्रमाणों और अनुसंधानों द्वारा मंडित हैं। नदी के गुणों को मुख्य रूप से ऊपरी हिमालय के जलग्रहण क्षेत्र में उपलब्ध जड़ी-बूटियाँ, खनिजों के विशाल भंडार के लिए जिम्मेदार ठहराया है।

गंगा नदी के पानी में बैक्टीरियोफेज होते हैं जिसके कारण गंगा के पानी में रोगाणुरोधी गुण होते हैं। ये बैक्टीरियोफेज इंसानों को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। वास्तव में, वे तपेदिक, निमोनिया, हैजा और मूत्र पथ के संक्रमण सहित कई रोग पैदा करने वाले सूक्ष्मजीवों से लड़ते हैं। साथ ही, गंगा के "अद्वितीय गुणों" की जांच के लिए केंद्रीय जल संसाधन मंत्रालय द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि नदी के पानी में जीवाणुरोधी गुणों वाले जीवों का अनुपात काफी अधिक है। [(11).]

'बैक्टीरियोफेज' या 'फेज' वायरस, बैक्टीरिया को संक्रमित तथा समाप्त करते हैं। बैक्टीरियोफेज में एक विशिष्ट प्रोटीन कोट (कैप्सिड) से घिरा एक न्यूक्लिक एसिड अणु होता है। गंगा नदी में पाया जाने वाला बैक्टीरियोफेज, विशेष रूप से इसके मूल में, कई प्रकार के जीवाणुओं को संक्रमित करने की क्षमता रखता है। इसे कुछ कैंसर उपचार हेतु भी प्रयोग किया जाता है। इन सूक्ष्मजीवों का उपयोग करके वैज्ञानिकों ने एक चिकित्सा विकसित की है जिसे फेज चिकित्सा कहा जाता है। यह भी अनुमान लगाया गया है कि गंगा नदी COVID-19 के उपचार में चिकित्सीय भूमिका निभा सकती है।[(12).]

सतत धार्मिक प्रथा की आवश्यकता

इस तथ्य के बावजूद कि गंगा या अन्य निदयों को साफ करने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं, शोधकतार यह दावा करते हैं कि धार्मिक परथाएं पवितर जल को महत्वपूणर रूप से परदूषित करती हैं। कई धार्मिक परथाएं जैसे कि यज्ञों के बचे हुए (अग्नि अनुष्ठान) को नदी में परवाहित करना, 'पवितर जल' में 'डुबकी' लेना, देवताओं को घर पर रखने के बाद उनका विसजरन करना नदी परदूषण का कारण बनता है। साथ ही, अंतिम संस्कार के अवशेषों को नदी में परवाहित किया जाता है, इस विश्वास के साथ कि यिद अंतिम अवशेषों को विसर्जित नही किया जाता है, तो मृत वयिक्त को शांति नही मिलेगी या मोक्ष पराप्त नही होगा। एक अन्य िहंदू परंपरा के अनुसार, पवितर पुरुष, गभरवती मिहलाएं , कुष्ठ या चिकन पॉक्स वाले लोग, सांपों दवारा काटे गए लोग, आत्महत्या करने वाले, गरीब और पांच साल से कम उमर के बच्चों का अंतिम संस्कार नही किया जाता है, बिल्क पानी में विसजरन किया जाता हैं। ये धार्मिक परथाएं बढ़ते जल परदूषण की समस्या को बढ़ा रही हैं।

धार्मिक प्रदूषण के प्रकार

फूल-प्रदूषण

भारत में महाकुंभ उत्सव के दौरान गंगा नदी में सामूहिक स्नान हेतु गंगाजल की गुणवत्ता जांच की गई। सामूहिक अनुष्ठान स्नान के साथ ऑक्सीजन की जैव रासायनिक मांग (बी.ओ.डी.), ऑक्सीजन की रासायनिक मांग (सी.ओ.डी.), कुल निलंबित ठोस (टी.एस.एस.) और अमोनिया नाइट्रोजन के महत्वपूणर उच्च स्तर देखे गए हैं। इस क्षेतर में, भारतीय और यूरोपीय बाहय स्नान मानकों के अनुसार मल संदूषण की एक खतरनाक स्तर का परदशरन किया जाता है। इन क्षेतर में कुल कोलीफामर बैक्टीरिया और मलीन कोलीफामर बैक्टीरिया अधिक हैं। इसके अलावा, जलजनित संकरमण के मामलें में ऐसे अनुभव देखे जा सकते है। यह अनुशंसा की जाती है कि सावरजनिक स्वास्थ्य और नदी के जल की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए स्नान स्थल पर चल रहे कीटाणुशोधन के साथ स्नान को सख्ती से नियंतिरत किया जाए। कुछ अध्ययनों से पता चला है कि गंगा सामूहिक स्नान तीथरयातरा (ए.एम.आर.) के दौरान आक्षेपरोधी बाधा में योगदान करता है। परतिरोध - भारत में मान्यता थी - तपेदिक जैसे रोग का अपरभावी होने का कारण कुछ परमुख एंटीबायोटिक दवायें है। [15]

सामूहिक-स्नान

भारत में महाकुंभ उत्सव के दौरान गंगा नदी में सामूहिक स्नान हेतु गंगाजल की गुणवत्ता जांच की गई। सामूहिक अनुष्ठान स्नान के साथ ऑक्सीजन की जैव रासायनिक मांग (बी.ओ.डी.), ऑक्सीजन की रासायनिक मांग (सी.ओ.डी.), कुल निलंबित ठोस (टी.एस.एस.) और अमोनिया नाइट्रोजन के महत्वपूणर उच्च स्तर देखे गए हैं। इस क्षेतर में, भारतीय और यूरोपीय बाहय स्नान मानकों के अनुसार मल संदूषण की एक खतरनाक स्तर का परदशरन किया जाता है। इन क्षेतर में कुल कोलीफामर बैक्टीरिया और मलीन कोलीफामर बैक्टीरिया अधिक हैं। इसके अलावा, जलजनित संकरमण के मामलें में ऐसे अनुभव देखे जा सकते है। यह अनुशंसा की जाती है कि सावरजनिक स्वास्थ्य और नदी के जल की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए स्नान स्थल पर चल रहे कीटाणुशोधन के साथ स्नान को सख्ती से नियंतिरत किया जाए। कुछ अध्ययनों से पता चला है कि गंगा सामूहिक स्नान तीथरयातरा (ए.एम.आर.) के दौरान आक्षेपरोधी बाधा में योगदान करता है। परतिरोध - भारत में मान्यता थी - तपेदिक जैसे रोग का अपरभावी होने का कारण कुछ परमुख एंटीबायोटिक दवायें है।

मामला उदाहरण 1

फूल 'मंदिर में कचरे की विशाल समस्या' के लिए दुनिया का पहला लाभदायक और आसान समाधान है। हम उत्तर परदेश, भारत के मंदिरों से परतिदन 8.4 टन फूलों का कचरा एकतर करते हैं। इन पवितर फूलों को हमारी 'फ्लावर साइकलिंग' तकनीक के माध्यम से चारकोल मुक्त धूप, जैविक कृमि खाद और जैवनिम्नीकरण पैकेजिंग सामगरी के साथ दस्तकारी की जाती है।

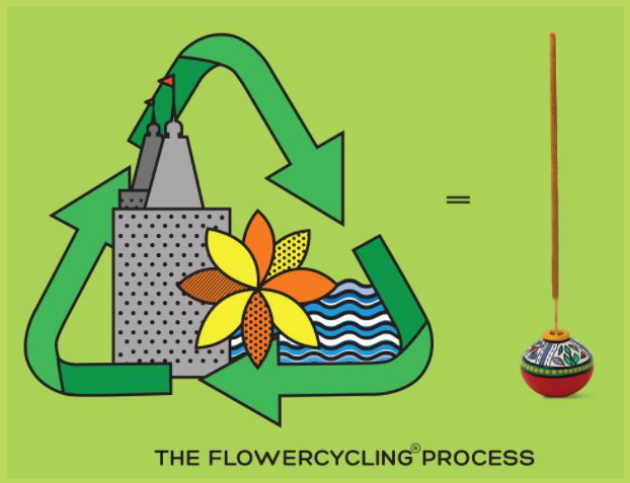

अधिक जानने के लिए

स्कैन कोड

स्रोत- www.phool.co

कुछ अध्ययनों से पता चला है कि गंगा सामूहिक स्नान तीर्थयात्रा (ए.एम.आर.) केदौरान आक्षेपरोधी बाधा में योगदान करता है। परतिरोध - भारत में मान्यता थी - तपेदिक जैसे रोग का अपरभावी होने का कारण कु छ परमुख एं टीबायोटिक दवायें है।[16].

सैकड़ों मूर्तियों का विसर्जन

इन मूर्तियो की पूजा कर जल निकायों में विसर्जित कर दिया जाता है। मूर्तियो का निमारण प्लास्टर ऑफ पेरिस, टन, लोहे की छोटी छड़ो और बांस दवारा किया जाता है, जिसमें विभिन्न परकार के सजावटी चितर जैसे वार्निश, पानी के रंग आदि होते हैं। इन चितरों में पारा, कै डमियम, आर्सेनिक, जिक, करोमियम, सीसा, और अन्य भारी धातुएं होती हैं। मरकरी, जिक ऑक्साइड, करोमियम और प्लम जो शिक्तशाली कार्सिनोजेनिक हैं, विशेष रूप से लाल, नीले, नारंगी और हरे रंगो में मौजूद हैं। इसके अलावा, सिदूर (एक पारंपरिक, लाल कॉस्मेटिक पॉलिश जो आमतौर पर विवाहित मिहलाओं दवारा लगाया जाती है और अक्सर त्योहारो में उपयोग किया जाती है), दो भारी धातुएं जैसे सीसा और करोमियम जल निकायों को जोड़ते हैं। नदी और झील में विसर्जित मूर्तियों केमाध्यम से छोड़ी गई सामगरी के अपघटन के बाद, अम्लता और भारी धातु की सांदरता सुपोषी होती है। मूर्तियो के विसजरन के कारण भारी धातुओं का परदूषण पार्रिस्थतिकी तंतर को नुकसान पहुंचाता है, मछलियों को मारता है, पौधो को नुकसान पहुंचाता है, पराकृतिक जल परवाह को अवरुदध करता है, जिससे ठहराव होता है। अब तक भोज, बुदधबलंगा, गंगा, हुसैनसागर, कोलार, सरयू नदी, तापी नदी, छतरी, बैंगलोर और यमुना झील सिहत विभिन्न भारतीय निदयों पर मूर्तिपूजा केपरभाव देखे गए हैं। [17]. गंगा नदी को साफ और सं रक्षित करने के लिए सरकार दवारा कई पहल की गई हैं। 'नमामि गंगे कार्यक्रम', एक एकीकृत सं रक्षण मिशन है, जिसे राष्ट्रीय नदी गंगा के परदूषण, सं रक्षण और कायाकल्प के परभावी उन्मूलन के दोहरे उददेश्यों को पूरा करने के लिए जून 2014 में कें दर सरकार दवारा 'परमुख कार्यक्रम' के रूप में अनुमोदित किया गया है। ऋषिके श स्थित एक एनजीओ गंगा एक्शन परिवार के अनुसार, "हरिदवार के हर की पौड़ी में जब नदी की सफाई दो महीने तक की जाती है, हम प्लास्टिक की थैलियों, मालाओं, सिक्कों, प्लास्टिक की बोतलों आदि जैसे बड़ी सं ख्या में अपशिष्ट एकतर करते हैं। जब सीमेंट या प्लास्टिक से बनी मूर्तियां नदी में फेंक दी जाती हैं, वे सभी नदी के लिए हानिकारक होती हैं। यह पानी के परवाह को बाधित करता है, जिससे यह ि स्थर हो जाता है। [14]. इससे बचने का एक ही तरीका है कि पयारवरण के अनुकू ल मूर्तियो और जैवनिम्नीकरण उत्पादों का उपयोग किया जाए, जिसमें किसी भी पॉलीथीन और प्लास्टिक के पातर का उपयोग न किया जाये। नदी को परदूषित ि कए बिना लोगो को अपने धमर का पालन करने के लिए शिक्षित और जागरूक करने के लिए इस तरह की और पहल की आवश्यकता है। गंगा नदी के किनारे परदूषण और आबादी में पयारप्त वृदिध को कम करने केलिए सतत परथाओं को लागू किया गया है लेकिन अभी भी बहुत कु छ किया जाना बाकी है और हम में से परत्येक को मां गंगा को पराचीन रखने और भावी पीढ़ी के लिए सं रक्षित करने केलिए इस पहल में हिस्सा लेना है।

मूर्ति विसर्जन पर प्रतिबंध

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एन.एम.सी.जी.) ने गंगा बेसिन के 15 राज्यों को त्योहारों जैसे की दशहरा, दिवाली, छठ, सरस्वती पूजा सहित गंगा में मूर्तियों के विसर्जन पर प्रतिबंध लगाने का निर्देश जारी किया है। इस प्रकार कि, कृतिम सामग्री और गैर-जैवनिम्नीकरण सामग्री का उपयोग करके मूर्तियों को आत्मसात करने के लिए प्लास्टर ऑफ पेरिस (पीओपी), बेकिंग मिट्टी, राल फाइबर और थर्मोकोल प्रतिबंधित कर दिया गया था। इसके अलावा, मूर्तियों को रंगने के लिए जहरीले और गैर-जैवनिम्नीकरण रासायनिक रंग या कृतिम रंग का उपयोग करना भी प्रतिबंधित था। एन.एम.सी.जी. ने त्योहारों के मौसम में विसर्जन के परिणामस्वरूप गंगा नदी में प्रदूषकों में वृद्धि देखी है।

स्रोत- www.phool.co

सूफी संगीत

वाराणसी के शांत और पवित्र वातावरण के साथ सूफी संगीत। प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृत पाठ ऋग्वेद में, शहर को काशी कहा जाता है, जिसका अनुवाद "चमक" होता है, और वाराणसी को "प्रकाश का शहर" कहा जाता है, जो "उत्कृष्ट शिक्षा का चमकदार शहर" है। बुद्ध के समय के लोगों द्वारा इसका उपयोग किया गया था और मार्क ट्वेन द्वारा प्रसिद्ध रूप से "इतिहास से प्राचीन, प्राचीन परंपरा से प्राचीन , उपाख्यान से भी प्राचीन, और सभी को एक साथ रखने से दोगुना प्राचीन दिखता है"। कबीर ने खुद को "अल्लाह और राम की संतान" कहा है। भारतीय रहस्यवादी कवि और संत कबीर को हिंदी में उनके काम के लिए जाना जाता है, जो स्थानीय बोली अवधी, ब्रज और भोजपुरी के साथ मिश्रित कल्पना का वर्णन करता है। उन्होंने विभिन्न विषयों को संबोधित किया और ईश्वर के प्रति समर्पित आस्था को प्रोत्साहित किया है। सभी धर्म उनके छंदों, दोहों और श्लोकों को नमन करते हैं। उनके गीत उनके गृहनगर वाराणसी की हवा में गूंजते हैं। इससे सूफीवाद पर काफी प्रभाव पड़ा, जिसने भारत को सूफी संस्कृति के लिए एक समकालीन उपरिकेंद्र बना दिया। उनकी सूफी शिक्षा देवत्व, ब्रह्मांडीय संतुलन, प्रेम और मानवता पर लोगों के लिए प्रासंगिक है।

ऊपर की छवि - सैर-शहनाई-जुलूस
स्रोत - https://www.hindustantimes.com/lifestyle/art-culture

फूल वालों की सैर

दिल्ली के फूल विक्रेताओं की परेड हर साल दिल्ली फ्लोरल गिल्ड का जन्मदिन मनाती है। यह तीन दिवसीय उत्सव, आमतौर पर सितंबर में, महरौली क्षेत्र में बारिश के मौसम के ठीक बाद आयोजित होता है। यह त्योहार हिंदुओं और मुसलमानों दोनों द्वारा मनाया जाता है, और इसे दिल्ली में सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने का श्रेय दिया जाता है। उत्सव में पंखों, शहनाई वादकों और नर्तकियों के साथ एक जुलूस शामिल किया जाता है, सभी पंखे बड़े फूलों से बने होते हैं एवं सभी 13 वीं शताब्दी के सूफी संत ख्वाजा बख्तियार काकी को याद करते है।

दीन-मैं इलाही

धर्म को व्यापक रूप से दीन-ए-इलाही (ईश्वरीय एकेश्वरवाद) के रूप में अपने समय के माध्यम से तौद-ए-इलाही ("ईश्वर की एकता") या दैवीय विश्वास के रूप में मान्यता प्राप्त थी, जिसे मुगल सम्राट अकबर द्वारा 1582 में तैयार किया गया था और अपने विभाजित विषयों के बीच संतुलन बनाने का इरादा था। यह धर्म निर्माण ईसाई धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म से प्रभावित था, लेकिन इसका मुख्य स्रोत इस्लाम, हिंदू धर्म और पारसी धर्म है। अकबर ने अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता को बढ़ावा दिया और यहां तक कि दार्शनिक और धार्मिक चर्चा की भी अनुमति दी थी। इसने 1575 में फतेहपुर सीकरी में इबादत खाना ("पूजा का घर") की स्थापना की। इबादत खाना में हुई चर्चाओं से, अकबर ने निर्धारित किया कि सत्य पर किसी एक धर्म का एकाधिकार नहीं था। इस प्रकटीकरण ने उन्हें 1582 में दीन-ए-इलाही धर्म की स्थापना के लिए प्रेरित किया।

ऊपर की छवि - सूफी खानकाह में सीखने वाले सूफी शिष्यों का चित्रण।
स्रोतः यूजीन बौगनी

भारतीय उपमहादवीप में देवी गंगा

नेपाल

संरक्षक जल के रूप में देवी गंगा को नेपाल में श्रध्दास्पद किया जाता है और यमुना नदी की देवी के साथ पूजा की जाती है। उनकी मूर्तियां चौक पाटन दरबार में देखी जा सकती हैं और काठमांडू के बागमती परदेश में गोकर्णेश्वर महादेव एक स्थान है।

श्री लंका

शरीलंका में, गंगा अन्य हिंदू देवताओं केसाथ एक बौदध व्यक्तत्व गरहण करती है। उनकी मूर्ति केलनिया राजा महा विहार में देखी जाती है।

मॉरीशस

मॉरीशस के हिंदुओं को गंगा तालाओ के रूप में माना जाता है, मॉरीशस का गंगा नदी से जुड़ाव है। 1972 में, मॉरीशस के तत्कालीन परधान मंतरी सर शिवसागर रामगुलाम ने भारत से गंगा नदी केसरोत गोमुख से गंगाजल को लाये और इसे गरैंड बेसिन के जल केसाथ मिलाया और उसे गंगा तालाव नाम दिया।

कंबोडिया

खमेर साम्राज्य के समय से ही गंगा कंबोडिया में पूजनीय थी। शिव को गंगा के साथ तथा उनकी पत्नी उमा (पार्वती) उमा-गंगापतिश्वर शिव के प्रतीकात्मक रूप में चित्रित किया गया है। बकोंग में गंगा के चित्र थॉमैनन में लिंटेल, और अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद में परदशरन केलिए लगाए गए हैं।

थाईलैंड

थाईलैंड केतिरयमपवाई शाही समारोह में, गंगा को हिंदू देवताओं शिव, भूमि, सूयर और चंदर केसाथ आमंतिरत किया जाता है। थाई बुशि म में देवी 'फरा मेए थोरानी' और ताई लोक धमर में देवी 'फोसोप' केसाथ उनकी पूजा की जाती है। सुफन बरी परांत केचार पवितर कुंड में गंगा और यमुना निदयों का पानी है और इनका उपयोग अनुष्ठान केलिए किया जाता है।

बाली

देवी गंगा और देवी दानू को बालिनी हिंदू धमर में पूजा जाता है। बाली में उसका जल पवितर माना जाता है। बाली में भीष्म केसाथ उनके मातृ संबंध को जाना जाता है। उनके धार्मिक स्थल 'तीर्थ गंगा', 'पुरा तमन मुंबुल संघ', 'कोंगको पुरा तमन गंडासारी' हैं।)

ग्रंथ सूची

1. http://cganga.org/wp-content/uploads/sites/3/2018/11/045_GBP_IIT_SEC_ANL_07_Ver-1_Dec-2013_0.pdf

2. https://www.deccanherald.com/ content /243628/ganga-unites-hindus-muslims.html

3. https://www.worldhistory.org/Ganges/

4. https://www.britannica.com/topic/KumbhMela

5. गंगा के तट पर त्यौहार | गंगा एक्शन परिवार | स्वच्छ गंगा, स्वस्थ गंगा।

6. http://www.chhath.org/significanceofchhath-parva.html

7. https://www.hindustantimes.com/lifestyle/ Festivals/buddha-purnima-2021-date-historysignificance-of-buddha-jayanti-101621948554517.html

8. https://www.dnaindia.com/lifestyle/reportmahavir-jayanti-2021-know-date-history-andsignificance-of-this-jain-festival-2887732

9. https://iskconeducationalservices.org/HoH/ practice/rites-of-passage/vivaha-marriage/

10. https://mythus.fandom.com/wiki/Makara

11. https://www.thehindu.com/news/national/ Ganga-has-higher-proportion-of-antibacterialgents-study/article26890979.ece

12. https://www.hindawi.com/journals/%20ijmicro/2020/8844963/

13. https://digital.library.txstate.edu/%20bitstream/handle/10877/5931/BacaEmily.%20pdf?sequence=1&isAllowed=y

14. https://www.dnaindia.com/india/report-thetoxic-waters-of-religion-2282976

15. https://phool.co/pages/impact

16. त्यागी, वी.के., भाटिया, ए., गौर, आर.जेड., खान, ए.ए., अली, एम., खुर्शीद, ए., काज़मी, ए.ए. और लो, एस.एल., 2013. गंगा नदी के पानी की गुणवत्ता में कमी और सामूहिक अनुष्ठानिक स्नान के कारण परिणामी स्वास्थ्य जोखिम। विलवणीकरण और जल उपचार, 51(10-12), पीपी.2121-2129

17. भट्टाचार्य, एस., बेरा, ए., दत्ता, ए. और घोष, यू.सी., 2014. भारतीय जल निकायों के जल गुणवत्ता मानकों पर मूर्ति विसर्जन के प्रभाव: पर्यावरणीय स्वास्थ्य परिप्रेक्ष्य। रसायन विज्ञान, भौतिकी और खगोल विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय पत्र, 20

18. https://en.wikipedia.org/wiki/Ganga_ (goddess)

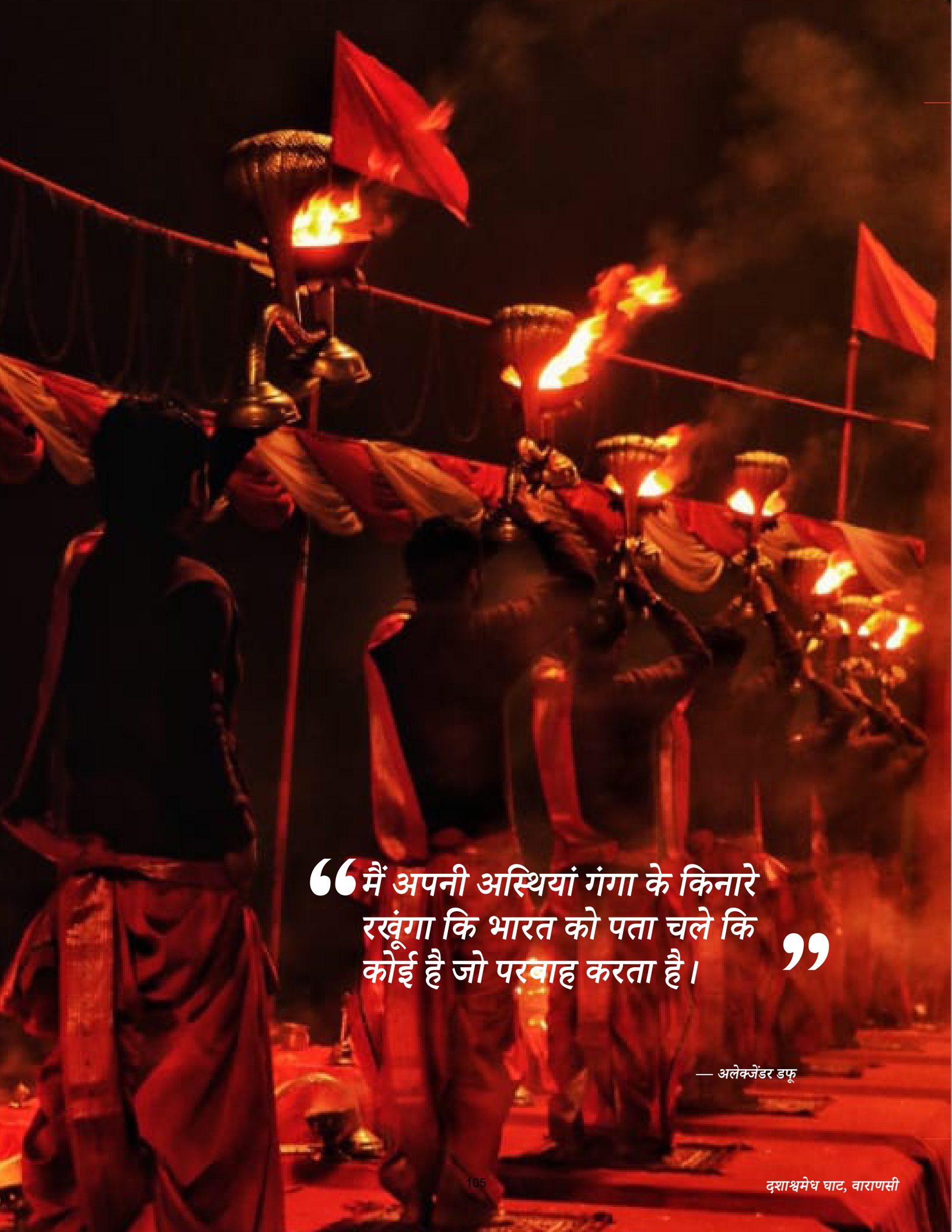

“मैं अपनी अस्थियां गंगा के किनारे रखूंगा कि भारत को पता चले कि कोई है जो परवाह करता है।”

— अलेक्जेंडर डफू

दशाश्वमेध घाट, वाराणसी

त्रिवेणी संगम, प्रयागराजी